

यो यो नं यं उ स म के लुं वी नी बा नं के पुं व बा वं न यो यि यो नं मां लि या
नं नं न सॉ लि क सं नं नं दि बा ल र यो नं यी यो यि यो नं पुं न ग नं नं व व
नं नं पुं द्या पुं द्य न मू नि या यि यो नं नी ल स ह नं गं स द्यो व यी यो नं न
ि क स यो वं न यं ग मां नि यो ॥

॥ वा य ना ल सि ॥ ना ल द नं य

... ननु क्व वा यथा ॥ पुनश्च क्व मन्त्राणि गण क्व यन्त्र क्व यियाश्च क्व वा
हि मन्त्राणि गण सन्धवन्त्र क्व यियाश्च क्व किं सवित्र विप्रवन्त्र क्व हि क्व हि क्व
क्व हि क्व सन्धवन्त्र ननु मन्त्र क्व सर्व दवन्त्र क्व दवन्त्र दिगं ॥ मन्त्र क्व यन्त्र
संज्ञा वः किं ह्यवन्त्र क्व क्व लाय ह्यवा ला व किं ह्यवन्त्र क्व क्व विन

किं नि ह्यवन्त्र नवना क्व वन्त्र सा वित्त क्व विग सा क्व क्व ला ॥ मन्त्र
निष्ठा सक्त्वा यथा क्व गणा ॥ क्व दिगं वन्त्र क्व वन्त्र क्व वन्त्र क्व वन्त्र
यन्त्र वन्त्र मन्त्र वन्त्र मन्त्र गगन संज्ञा वः ॥ ॥ वाग क्व यिया ॥ क्व
मान ॥ ॥ क्व वन्त्र वन्त्र वि वि प ॥ क्व पद्म वा पद्म क्व मन्त्र क्व दव

गनाद वावादि । एदाव नृणा गि. क ववः । उम वृथ १४ धनि सुम
ग वा ॥ ॐ वका मृका दक म १५ कि नि समरा वनु रावक मृद
यवृपं १ गध स सु व रि श्री लम्बि मदा का व ॐ सुप कि लि नः
वक सा हा ॥ कनक रूप मनि व क न वि ठ द्य हः प १६ प ल व उप

१ अलि ना १ प १६ मृ क प १६ व क न प १६ उ व वि प १६ वि दि नि थ
द कं १ वा का मृ क उ द्वा क १६ ल स दि नाः श्री व का वा र्य म न न्या
स १ ता कि नी वा मा र्य १६ वा हा व पि निः वि व वि व १६ व स रू ना श स
१ मृ व स १ १६ व व १६ व १६ अ रि म क स र व रु स द्य तु क हा १

१६ व व

१६ व व

नमो भूयः स्वस्ति ॥ १३ ॥ १३ ॥ काका वरुणानां एकवत्सं दध्ना ॥ ० ॥
 वागवत्सं कः अथ वा ललिता ॥ गालदुर्कमाना ॥ ० ॥ कुम्भनि
 त्ता रुनपयः कान्तव्याः कंकावाः कृतविक्रमस्तुत्यान्नाशनिवासि
 कमांकावा रुवमा मकिः स्वस्ति नवजीवना ॥ नमामि ॥ ॥

यावत्तिवठिम् वक्राम् रेषकम् अन्तःपादकम् १ अलिङ्गापदसम्बर
 निम्नान्ननस्थिकः मकम् तुरगिन्नयनम् अन्तःपादकम् १ अन्तःपाद
 कम् अन्तःपादकम् अन्तःपादकम् अन्तःपादकम् अन्तःपादकम्
 अन्तःपादकम् अन्तःपादकम् अन्तःपादकम् अन्तःपादकम् अन्तःपादकम्

वाह्याय॥ ॥ अग्निः अग्निमिया निलं क त द। षः सः दृक् स
न विवेया कि न दृक् य वि। अथ नावयि॥ ॥ उच उ या गि नि
दृक् स स वा २ व रु वा वा हि अलिङ्ग स का यी व नावयि॥ ॥ उर्थ स
वा द। क व १ क वा व २ क य अलिङ्ग स नी व व र्हि वा वि व नाव॥ ॥

॥ ५ ॥

उत्थं द्रुं रयादाथी सन्ध व वाह गायकः रुद्रिय उगक निवा सियावः
॥ ॥ धनशालि काकाय ॥ ॥ शालि का तु ल मा ना क व क न रु
ग वः र व व र्णा स प म ॥ वा र् का वि ला णाः वि र व न म ना रु वा ला
दु ना क न्द वि का ॥ श न न्द व क मा नाः नि र्प र्म स ग कः ला ग वि का गः

॥ ५ ॥

संग ॥ श या व व क मा नाः कि न गु धा नि व यं पा तु व ४ सि दि स म्भ व
४३ ॥ ॥ स र्व का थ ग का ला नः स र्व का थ ग का व यः स र्व ध र्मा ग नि
वा ला ४ द ठा म ४ ल मूर् क म ॥ ला न ध र्मा ग स र्व कं ला न य र्था वि सा धः
कः स म न रु ड का या ग रा था म ४ ल मूर् क म ॥ स र्व व क म स प र्मः स र्व

ब्रह्म तद्विवर्तितं ॥ समस्त रुद्र विष्णुगणनाम १३ संस्कृतम् ॥ सर्वतः
 नमस्तस्मै ॥ शुद्धयस्तु किं निर्मला समस्त रुद्र वायुगणाय नमः १३
 सा ॥ १४ ॥ ॥ वागकाय ॥ दानपुत्रिकाय ॥ गुरु ॥ अथ वियः शुद्धिः
 गायत्र्युक्तिरिति ॥ ॥ वागकाय ॥ कातन्त्रकमाथा ॥

सिद्धिः ॥ जयविद्युतः ॥

३५
 ३६
 ३७

॥ वागकाय ॥ उवाच ॥ मुनिवन्द्यं कौशिकं न कापि विन्दुः
 वागकाय ॥ कीयांती न वागकाय ॥ ॥ मन्त्रयुक्तं द्रव्यं कुर्या
 यां रंति तिस्रं हि न वागकायियां ॥ रं हि वागकायं हि मा ॥ १४ ॥ मन्त्र
 यना सांवागयायां रं हि कातिरं न मा लिङ्गं रं द्रव्यं वागकायिया